# श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका

# શ્રી કૃષ્ણ પ્રણામી ધર્મ પત્રિકા

मूरति नाना तरहकी, हरि हर विधिकी आइ ।
पूजी सब बालन सहित, पियै दुधमुख बाइ ।।
देख अचंभो होवहीं, गर बालकनि सोइ ।
देवचन्द्र नहिं मानवी, अवतारी कोउ होइ ।।
- वृत्तान्तमुक्तावली

निजानन्दचार्य सद्गुरु श्री देवचन्द्रजीकी बाल लीला

नवम्बर २००९

वर्ष ८१ श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर अंक ११

www.krishnapranami.org

शामलाजीमें दिनांक २३ से २९ अक्तूबर २००९ पर्यन्त
आयोजित श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सवके विविध दृश्य

श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सवके अवसर पर श्रीमद्भागवत कथा
करते हुए श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रमके संचालक श्री पुरुषोत्तम शास्त्रीजी

श्री ५ नवतनपुरी धाममें रहकर वर्षोंसे श्री प्राणनाथ मेड़ी मंदिरमें पुजारीके रूपमें सेवा करने वाले संत श्री मोहनदासजीका दिनांक ९ अक्तूबर २००९ के दिन धामगमन हुआ। उन्होंने सेवाको ही धर्म मानकर संपूर्ण जीवन सेवामय व्यतीत किया है ऐसे सेवाभावी संतको श्री राजजी अपने चरणोंका सुख प्रदान करें ऐसी प्रार्थना।

# श्रीकृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका


वि.सं : २०६६ निजानन्दाब्द : ४२८ बुद्धजी शाके : ३३२

वर्ष ८१ **नवम्बर २००९** अंक ११

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामित्व } जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज

मुद्रण एवं प्रकाशन स्थल } श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजड़ा मन्दिर जामनगर - ३६१ ००१ (गुजरात) भारत

सम्पादक (मानद्) : डॉ. प्रवीण चन्द्र परीख

सम्पादक मण्डल : शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्य तथा श्री कनकराय व्यास

| वार्षिक शुल्क रु. १००/- | १५ वर्षीय शुल्क रु. १०००/- |
|---|---|



पता : श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका, श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर ३६१ ००१

फोन : (०२८८) २६७ २८२९ फेक्स (०२८८) २५५ १३५३

**E-mail : navtan@sancharnet.in, navtanpuri@gmail.com**

**website : www.krishnapranami.org/www.krishnadham.org**


## सद्गुरु श्रीजी मिलाप

वि.सं. १६८७ को कार्तिक पूर्णिमाके पवित्र दिन पर निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्रजी महाराजने श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके आचार्यपीठ श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्थापना की थी । वह तिथि इस वर्ष दिनांक २-११-०९ को थी । तदनन्तर मार्गशीर्ष शुक्ल नवमीके दिन श्री प्राणनाथजी सद्गुरुके चरणोंमें आए थे । वह पवित्र तिथि इस वर्ष दिनांक २६-११-०९ को है । उस अवसर पर मुम्बईमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सवका आयोजन है । जिसमें दिनांक २२ से २८-११-०९ पर्यन्त श्री तारतम सागरके १०८ साप्ताहिक पारायण, वाणीचर्चा, भागवत कथा, प्रवचन आदि होंगे ।

# मेहेर सागर

**पूज्य पाद् जगद्‌गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज**

**( गतांक पृष्ठ ७ से आगे......... )**

कृपाके द्वारा ही कृपाको समझना चाहिए। इस बातको स्पष्ट करते हुए कह रहे हैं,

**जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।**

**अपार उमर अपार जुबांए, तो मेहेर को हिसाब न होए॥ ४१**

श्री राजजीकी कृपाका एक भी शब्द मुझसे कहा जा रहा है तो उसे तुम उसी कृपाके द्वारा समझनेका प्रयत्न करो। यह कृपा इतनी महान है कि अपार समय पर्यन्त असंख्य जिह्वासे इसका वर्णन करने लगें तो भी इसका निरूपण नहीं हो सकेगा।

**जो एक वचन कहूँ मेहेर का.......**महामति श्री प्राणनाथजी हमें समझा रहे हैं कि श्री राजजीकी कृपाके वर्णनमें यदि मेरी जिह्वासे एक शब्दका भी उच्चारण होता है तो उसे भी तुम श्री राजजीकी कृपाके द्वारा ही समझनेका प्रयत्न करो। क्योंकि कृपाको कृपाके द्वारा ही समझा जा सकता है अन्यथा मात्र बुद्धिके प्रयोगसे कृपाको पूर्णतया समझा नहीं जा सकता। यह बुद्धि नश्वर जगतकी वस्तुओंको भी पूर्णतया समझ नहीं पाती है तो श्री राजजीकी कृपाको पूर्णरूपेण कैसे समझ सकेगी ? इसीलिए कहा है कि श्री राजजीकी कृपाको समझनेके लिए उनकी कृपाका ही सहारा लेना चाहिए। हम श्री राजजीसे प्रार्थना कर सकते हैं कि हे धनी ! आपकी कृपाको समझनेके लिए भी आप ही कृपा करें। अथवा हे धनी ! आप ऐसी कृपा करें जिससे हम आपकी कृपाको समझ सकें। कृपाका बाह्यरूप तो लोगोंको दिखता भी है और लोग उसे समझनेका प्रयत्न भी करते हैं किन्तु उसका यथार्थ स्वरूप तो आन्तरिक है उसे समझना मात्र बुद्धिका कार्य नहीं है। मात्र बुद्धिसे विचार करनेवालोंको वास्तविक कृपा दिखती ही नहीं है। हृदयपूर्वक विचार करनेवाले

ही कृपाके दर्शन कर सकते हैं। श्री राजजीकी कृपासे ही ब्रह्मात्माएँ कृपाके आन्तरिक स्वरूपको समझती हैं और उनमें ही यह कृपा उतरती भी है। क्योंकि कृपाके दर्शन करते करते उनका हृदय ही निर्मल हो गया होता है।

**अपार उमर अपार जुबांए..........**श्री राजजीकी कृपा इतनी महती (महान) है कि अनन्त काल पर्यन्त अनन्त जिह्वासे वर्णन करना चाहें तो भी उसका पूर्ण वर्णन नहीं हो सकता है। इसीलिए महामति कहते हैं कि सीमित शब्दोंमें कृपाका वर्णन हो रहा है वह श्री राजजीकी कृपासे ही है इसलिए कृपाके द्वारा ही कृपाको समझनेका प्रयत्न करना चाहिए। बात भी मननीय है कि जब कृपाका वर्णन ही कृपाके द्वारा हो रहा है तो कृपाके द्वारा ही कृपाको समझा जा सकेगा अन्यथा अनेक जन्मों पर्यन्त वारम्वार प्रयत्न करने पर भी कृपाका निरूपण सम्भव नहीं होगा।

अन्य सागरोंसे अधिक महत्त्व आठवें सागर कृपा सागरका दर्शा रहे हैं,

**निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को निके जान।**
**जो मेहेर होय तुझ ऊपर, तो मेहेर की होए पेहेचान॥ ४२**

निश्चय ही यह आठवां सागर अति महान है। इसे श्री राजजीकी कृपाका सागर समझना। यदि तुझ पर श्री राजजीकी कृपा होगी तब तुझे कृपाके सागरकी यथार्थ पहचान होगी।

**निपट बड़ा सागर आठमा..........**परमधामकी विविध सम्पदाओंमें श्री राजजीकी कृपा सर्वोपरि मानी गयी है। यह कृपा इतनी विशाल है कि इसके लिए सागरकी उपमा भी छोटी पड़ती है। किन्तु इसके वर्णनके लिए दूसरे शब्द ही नहीं हैं इसलिए सागर कहकर वर्णन करना पड़ा है। परमधामकी अनेक सम्पदाओंको सागरकी उपमा दी गई है। उन सभीमें यह आठवां सागर कृपाका है इसलिए यह अन्य सभी सागरोंसे श्रेष्ठ और विशाल है।

**जो मेहेर होय तुझ ऊपर..........**श्री राजजीकी कृपा जिन पर उतरती है वही आत्मा कृपाको यथार्थ रूपमें पहचानती है। अन्यथा कृपाके बाह्य

दर्शन ही होते हैं। सामान्य व्यक्तिको कृपाके बाह्य रूपके दर्शन होते हैं इसलिए ऐसे व्यक्ति भौतिक लाभको ही परमात्माकी कृपा समझते हैं। दूसरे शब्दोंमें कहें तो अमुक व्यक्ति पर परमात्माकी कृपा हुई है ऐसा कहने पर सामान्य व्यक्ति समझते हैं कि उसको भौतिक सम्पत्ति, मान, प्रतिष्ठा आदि भौतिक वस्तुएँ अपार मिली होंगी। उनको यह ख्याल ही नहीं होगा कि उसको स्वयंकी पहचान हुई होगी, श्री राजजीकी अनुभूति हुई होगी, दर्शन हुए होंगे, आदि आदि। जिस आत्मा पर श्री राजजीकी कृपा होती है वही यह समझ पाती है कि किसी पर श्री राजजीकी कृपा हुई है तो उसे आत्माकी पहचान, परमात्माकी पहचान, परमात्मा तथा परमधामके दर्शन आदि हुए होंगे। इसलिए कहा गया है कि श्री राजजीकी कृपा होने पर ही उनकी कृपाकी यथार्थ पहचान होती है।

आठवें सागर कृपा सागरका महत्त्व और दर्शा रहे हैं,

**सात सागर वर्णन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।**
**ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कै कोट करूं किताब॥ ४३**

सातों सागरोंका वर्णन हो गया है किन्तु इस आठवें सागर अर्थात् मेहेर सागरका कोई पारावार ही नहीं है। श्री राजजीकी कृपाका वर्णन करते हुए करोड़ों ग्रन्थोंकी रचना भी क्यों न की जाए तथापि इसका पार पाया नहीं जा सकेगा।

**सात सागर वर्णन किए.........**कृपाके सागरके वर्णनसे पूर्व महामतिने श्री राजजीका शोभा, श्रृंगार आदि सागरोंका वर्णन किया है। यद्यपि उनका वर्णन करना भी सीमित शब्दोंके द्वारा सम्भव नहीं है। श्री राजजीकी अपार शोभाको शब्दोंकी सीमामें बांधना कठिन होता है तथापि महामतिने उनका वर्णन किया किन्तु जब वे कृपाके सागरका वर्णन करने लगते हैं तब कहते हैं कि इस सागरका तो कोई पारावार ही नहीं है। जिसका कोई पारावार ही नहीं होता है उसका वर्णन कहाँसे आरम्भ करें और कहाँ जाकर पूर्ण करें ? महामति हमें यह समझा रहे हैं कि उन्होंने जो कुछ वर्णन किया है वह श्री राजजीकी कृपाके समक्ष नहिवत् है। महामतिको चारों ओर श्री राजजीकी

कृपा दिखाई देती है इसलिए वे कहते है कि मैं उसका वर्णन कैसे करूँ ? इसका वर्णन करते हुए करोड़ों ग्रन्थ भी बन जायेंगे तो भी इसका पार पाया नहीं जा सकेगा। यह कृपा श्री राजजीकी है इसलिए इसका पार पाना सम्भव नहीं है। अन्य कोई वस्तु होती तो उसका पार पाया भी जा सकता किन्तु श्री राजजीकी कृपा तो उनकी भांति वर्णनोंसे परे है। करोड़ों जिह्वासे अनन्त काल पर्यन्त वर्णन करने पर भी इसका पार पाया नहीं जा सकेगा।

ब्रह्मात्माएँ श्री राजजीकी कृपाको जान सकती हैं एवं अनुभव कर सकती हैं। यह बात समझा रहे हैं,

**ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।**
**ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥ ४४ ॥**

इस कृपाके सागरको तो ब्रह्मात्माएँ ही जान सकती हैं क्योंकि उनके ऊपर ही यह कृपा हुई है। उनको श्री राजजीकी कृपाके अतिरिक्त सब कुछ विषतुल्य लगता है।

**ए मेहेर मोमिन जानहीं........**ब्रह्मात्माएँ ही श्री राजजीकी कृपाको जान सकती हैं। उनको ही कृपाका अनुभव होता है। यद्यपि इस जगतमें सभी प्राणियों पर श्री राजजीकी कृपा छायी हुई है उसे सभी प्राणी समझ नहीं पाते हैं। उसे समझनेकी योग्यता मनुष्यको प्राप्त है तथापि सभी मनुष्य इसकी ओर विचार नहीं करते हैं। ऐसेमें ब्रह्मात्माएँ सदैव श्री राजजीकी कृपाकी रहती होती हैं। उनको कहीं भी अच्छाई दिखती है वहीं वे श्री राजजीकी कृपाके दर्शन करती हैं। उनको ही श्री राजजीकी कृपाके अनुभव होते हैं। सबके ऊपर कृपा होने पर भी सबको इसका अनुभव नहीं होता है। ब्रह्मात्माको कृपाके दर्शन इसलिए होते हैं कि वे कृपाको देखना चाहती हैं। उनको कृपाके अतिरिक्त कुछ दिखता ही नहीं है। उनको सदैव कृपाका अनुभव होता है। थोड़े समयके लिए भी यदि कृपाका अनुभव होना बन्द हो जाय तो उनको यह संसार विषतुल्य लगने लगेगा। उनको श्री राजजीकी कृपामें ही सुख है, शान्ति है तथा सन्तोष है। अन्यथा श्री राजजीकी कृपाके अतिरिक्त उनको सारा संसार

ही विषयम लगने लगता है। वे सदैव श्री राजजीकी कृपामें ही जीवित रहती हैं।

श्री राजजीकी कृपाके वर्णनका उपसंहार करते हुए कह रहे हैं,

**महामति कहे ऐ मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर ।**
**सो मेहेर हक कदमों तले, पीओ अमीरस हक नजर ॥ ४५**

महामति कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! श्री राजजीकी कृपाका यह सागर अति महान है। अब इसी कृपाके द्वारा श्री राजजीके चरणोंमें जागृत हो कर उनकी दृष्टिमें स्थित अमृत रसका पान करो।

**महामति कहे ऐ मोमिनो........**महामति ब्रह्मात्माओंको सम्बोधित करते हुए कहते हैं, हे ब्रह्मात्माओ ! श्री राजजीकी असीम कृपाका यह सागर अति महान है। इसका पूर्णतः वर्णन करना सम्भव नहीं है। तथापि हमें यह समझना चाहिए कि हम उनकी कृपाके अन्तर्गत हैं। उन्होंने हम पर अपार कृपा की है। इसी कृपाकी अनुभूति करवानेके लिए उन्होंने हमें नश्वर जगतमें भेजा है। अब हमें इसी कृपाके द्वारा जागृत होकर श्री राजजीके सान्निध्यका अनुभव करना है और उनकी कृपा दृष्टिसे बरसते हुए अमृत रसका पान करना है। श्री राजजीके चरणोंमें स्थित पर आत्मामें जागृत होनेपर उनकी कृपादृष्टि हम पर पड़ रही है ऐसा अनुभव होगा और हम उस कृपारूपी अमृतरसका पान कर परम आनन्दका अनुभव करेंगे।

इस प्रकार महामतिने यहाँ पर ४५ चौपाइयोंके द्वारा श्री राजजीकी कृपाका वर्णन किया। वैसे तो श्री तारतम सागरमें अनेक स्थानों पर कृपाके वर्णन हुए हैं तथापि एक साथ विस्तृत और रहस्यपूर्ण वर्णन यहीं पर है। इसलिए कृपाके सागर स्वयं श्री राजजी होने पर भी इस प्रकरणको मेहेर सागर अर्थात् कृपाका सागर नाम दिया है। यही इसका महत्त्व है। श्री राजजीकी कृपाका वर्णन करते हुए अर्थात् पाठ करते हुए हम भी कृपामय बनें और सर्वत्र कृपाके दर्शन करें। यही अभ्यर्थना

# अक्षर ब्रह्म

**ब्रह्मलीन आचार्य श्री १०८ धर्मदासजी महाराज- श्री ५ नवतनपुरी धाम**

प्रिय जिज्ञासुवृन्द ! आध्यात्मिक वादके स्तर पर विचरने वाले आपके विवेकोत्थ ज्ञानको यह तो परोक्ष नहीं कि इस दृश्यमान विश्वका उदय लय अथवा प्रादुर्भाव तिरोभाव जो कुछ भी है उस सबका कारण एक मात्र अविनाशी तत्त्व अक्षर ब्रह्म ही है ।

प्राचीन ऋषि महर्षियोंने इस अक्षर तत्त्वको बहुत कुछ समझा एवं समझाया है । ऋषियोंका तो यहां तक पूर्ण विश्वास था कि अक्षर ब्रह्मको पूर्णतया समझे बिना कुछ भी किया जाय वह व्यर्थ है । यज्ञ जप तप सभी निष्फल हैं । यथा,

**अथ हैनं गार्गी वाचकन्वी प्रपच्छ याज्ञवल्क्येति ह्योवाच-यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्त्वाऽस्मिंल्लोके जुहोति यजते तपस्तप्यते बहूनि वर्षसहस्त्राण्यन्तवदेवास्य तद्भवति ।**

**( बृहदारण्यक उ. ३-८ )**

राजर्षि जनक विदेहकी महासभामें ब्रह्मनिष्ठ गार्गी द्वारा पूछे गए प्रश्नोंका उत्तर देते हुए ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं, हे गार्गि ! लाखों वर्ष पर्यन्त यज्ञ, होम, भजन पूजन, जप, तप कुछ भी करो, परन्तु अक्षर ब्रह्मके स्वरूपको जाने बिना वह सर्व निष्फल है । अक्षर ब्रह्मके स्वरूपको जब तक न जान लिया जाय, जो कुछ किया कराया सब निष्फल हो जाता है । और वह तुच्छ समझा जाता है ।

**यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणोऽथ य एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स ब्राह्मणः ॥**

**( बृहदारण्यक उ.३-८ )**

हे गार्गि ! जो कोई ज्ञानी इस अक्षर ब्रह्मको जाने विना ही मृत्युलोकसे चला जाता है वह कृपण माना जाता है। अर्थात् उसका जीवन रूप धन सब व्यर्थ गया। और जो तत्त्वदर्शी इस अक्षर ब्रह्मके स्वरूपको जानकर मृत्युलोकसे चला जाता है वही ब्रह्मज्ञानी होनेसे ब्राह्मण कहलाने योग्य है। इस प्रकारसे गार्गीको समझाया है। महाभारतमें भी भीष्मपितामहने युधिष्ठिरके प्रति अक्षर ब्रह्मको बतलाते हुए कहा है। यथा,

**अक्षरं ध्रुवमेवोक्तं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।**
**अनादिमध्यनिधनं निर्द्वन्द्वं कर्तृ शाश्वतम् ।।**

हे युधिष्ठिर ! अक्षर अविनाशी सनातन ब्रह्मका नाम है। आदि अन्त रहित वह अविनाशी ही सबका कर्ता है वही शाश्वत है।

संख्यावादी और कुछ अन्य विद्वान प्रकृतिके अव्यक्त स्वरूपको भी अक्षर प्रतिपादन करते हैं। कतिपय विद्वान मायायुक्त (सबल ब्रह्म) ब्रह्मको भी अक्षर शब्दसे ग्रहण करते हैं। एवं कुछ मतवादी ओंकार प्रणवको भी अक्षर ब्रह्म मानते हैं। इस प्रकारसे अक्षर ब्रह्मके विषयमें नाना प्रकारकी मान्यताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। यही कारण है कि श्रुतियां अक्षर ब्रह्मके वास्तविक स्वरूपको जाननके लिए जोर देतीं हैं।

**अक्षरमम्वरान्त धृतेः सा च प्रशासनात्** इत्यादि वेदांत सूत्रों द्वारा व्यासजीने यह तो स्पष्ट कर दिया है कि '**ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म**'

''**ओमित्यक्षरस्य पादाश्चोत्वारो देवाश्चत्वारो वेदाश्चत्वारश्चतुष्पाद एतदक्षरं परं ब्रह्मेति**'' इत्यादि श्रुतियोंमें जिस प्रणव ओंकारका प्रतिपादन है वह अक्षर ब्रह्मका प्रतिपादन नहीं है किन्तु प्रणव अक्षरका ही वर्णन है।

इसी प्रकार सांख्यवादी जिस प्रकृतिको अक्षर शब्दसे व्यवहार करते हैं वह भी अक्षर ब्रह्मसे भिन्न पदार्थ है। इसीलिये शास्त्रमें लिखा है कि,

**प्रकृतित्वेनाऽक्षरं हि ये वदन्ति विमोहिताः ।**
**पुरुषत्वेन निर्दिष्टं कथं पश्यन्ति ते नहि ।।**

प्रकृति पदसे जो लोग अक्षरका प्रतिपादन करने लगते हैं वे पुरुष शब्दसे निर्दिष्ट अक्षर ब्रह्मको क्यों नहीं देख लेते ? उत्तर तो बड़ा ही सुन्दर

है किन्तु अज्ञान वश जान नहीं पाते। जिस प्रकार **प्रणवो धनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते**' इत्यादि मुंडक श्रुतिमें आत्मा और ब्रह्म दोनोंसे भिन्न प्रणव ओंकारको बताते हुए स्पष्ट कर दिया है कि प्रणव (ओंकार) ब्रह्म नहीं किन्तु ब्रह्म तो जीवात्माका लक्ष्य है जो धनुष रूप प्रणवसे कोशों कोश दूर है। उसी प्रकार प्रकृति पदसे अक्षर ब्रह्मका ग्रहण नहीं है इस प्रकार शास्त्रके कहने पर भी कतिपय विद्वान दुराग्रहवश अक्षर पदसे प्रकृतिको ही मानते हैं।

वस्तुतः जिस अक्षरको वे प्रकृति कहते हैं उसका तो नाश भी होना पाया जाता है। यथा,

**अव्यक्तमक्षरे लीयते अक्षरं नमसि लीयते।**
**तमः परे देवे एकीभवति। ( सुबलोपनिषद )**

अव्यक्तका लय प्रकृतिरूप अक्षरमें और उस प्रकृतिरूप अक्षरका लय तमसमें और तमोरूप बीज परदेव अक्षरमें जाकर समा जाता है। इस प्रकारसे अक्षर पद वाच्य अक्षरका नाश नहीं किन्तु अविनाशी है और सबका कारण चेतन अजर अमर पुरुष है।

यह अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत ब्रह्मका एक अंश मात्र अंगस्वरूप ही है। यथा,

**एकस्यात्मनोऽन्ये देवाः प्रत्यङ्गानि भवन्ति**

**( निरुक्त अ. ७ )**

उस परात्पर उत्तम पुरुष अक्षरातीत ब्रह्मके अन्य अक्षर सत्स्वरूप आदि सब अंग प्रत्यंग हैं। उस परब्रह्म परमात्माका अखण्ड अपार और असीम ऐश्वर्य सर्वत्र पूर्णतया शोभा ले रहा है। वह अनन्त रूपसे वेद शास्त्रों द्वारा वर्णन किया जाता है।

**आत्मैवैषां रथोभवति आत्मा अश्वः ।**
**आत्मायुधमात्मेषच आत्मा सर्वं देवस्य ॥**

**( निरुक्त अ. ७ खण्ड ४ )**

इस परमात्माके आत्मस्वरूप ही सब कुछ पदार्थ विद्यमान हैं।

आत्मा ही रथ सुखपाल आदि रूपसे विद्यमान है। आत्मा ही वाण आयुध अथवा लीलामात्र यावद् सामग्री है सब आत्मा स्वरूप ही है। अर्थात् जो सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म है वही सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म धामके सम्पूर्ण पदार्थ हैं। इसी बातको श्री प्राणनाथजीने भी स्पष्ट किया है कि ब्रह्मधामके सब पदार्थ आत्मास्वरूप हैं और वे सब मिलकर एक ब्रह्मके स्वरूप ही हैं।

जिस अक्षरातीत ब्रह्मके ऐश्वर्यका इस प्रकार विस्तृत वर्णन आत्मतत्त्वदर्शी महर्षियोंने किया है उसी परमात्माका स्वरूपभूत एक अंश अक्षर ब्रह्म है, जो अनन्त कोटि ब्रह्मांडोंका उदय लय एक निमेषमात्रमें किया करता है। यथा,

**अण्डकोशो बहिरयं पञ्चाशत्कोटि विस्तृतः।**
**दशोत्तराधिकैर्यत्र प्रविष्टः परमाणुवत्॥**
**लक्ष्यन्तेऽन्तर्गताश्चान्ये कोटिशो ह्यण्डराशयः।**
**तमाहुरक्षंर ब्रह्म सर्वकारणकारणम्॥**

**( भाग० द्वितीय )**

पचास करोड योजनके विस्तारवाला यह विश्व अपने दशगुने आठ आवरणों सहित जिस अक्षरके अन्तर्गत परमाणुके समान है। इसके सिवा ऐसे करोड़ो ब्रह्मांड जिस ब्रह्मके अन्तर्गत लक्षित हो रहे हैं, सब कारणोंके कारण उस ब्रह्मको अक्षर कहते हैं। श्रुतियोंमें भी **एतस्यवाक्षरस्य प्रशासने सूर्या चन्द्रमसौ** इत्यादि कह कर इस अक्षरको ही प्रतिपादन किया है। यह अक्षर सदा अविनाशी है इसकी चतुष्पाद विभूतिको ही वेद शास्त्रोने यत्र तत्र वर्णन किया है इसके स्वरूपको तो कोई विरले ही महात्मा विद्वान पुरुष समझ पाते हैं। यर्जुवेदमें इसका वर्णन आता है। संक्षेपमें एक मन्त्र देते हैं,

**एतावानस्य महिमाऽतोज्यायांश्च पुरुषः।**
**पादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥**

**( यजु. ३१ मंत्र ३ )**

यह चतुष्पाद विभूति स्वरूप जितना कुछ है वह सब तो उस अक्षर

ब्रह्मकी महिमा मात्र है वह स्वयं तो इस विभूति पादोंसे कहीं अधिक महान है । उस चतुष्पाद विभूतिमेंसे एक पादमें तो अनन्त ब्रह्मांडोंका उदय लय होता रहता है और शेष तीन पादोंमें अखण्ड ऐश्वर्य है, जो कभी नाशको प्राप्त नहीं होता । **त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्त्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ( यजु. ३१-४ )** इस विभूतिमय अक्षरके तीन पाद-सबलिक, केवल और सत्स्वरूप, ये तीनों सदा सर्वदा अखण्ड उदीयमान हैं और चौथा पाद जो अव्याकृत है, वह इस विश्वरूपसे पुनः-पुनः उदय लय पाया करता है, जिनकी संख्या करना कठिन है । यथा,

**संख्या चेद्रजसामस्ति न विश्वानां कदाचन ।**
**ब्रह्माविष्णुशिवादीनां तथा संख्या न विद्यते ॥**

कदाच कोई पृथ्वीके रजकण जो अनन्त अपार हैं, गिन भी ले परन्तु ब्रह्मांडोंकी संख्या तो धूलीके कणोंसे भी अधिक है जिस प्रकार विश्वोंकी संख्या असंख्य है उसी प्रकार प्रति विश्वमें होने वाले ब्रह्मा, विष्णु एवं महेशकी भी संख्या अनन्त है । अब विचार कीजिये कि अक्षर ब्रह्मके एकपादमें उदय लय पाने वाले जब विश्वोंकी संख्या नहीं तो उन विश्वोंके अन्तर्गत पदार्थोंकी कौन संख्या कर सकता है । जब उदय लय वाले पादको ही हम नहीं गिन पाते न उसे पूर्णतया समझ सकते हैं तब अखण्ड ऐश्वर्य वाले उन तीनों विभूतिपादोंके ऐश्वर्यका परिसंख्यान करना तो असम्भव है । फिर जिस अक्षर ब्रह्मकी विभूतिको ही हम नहीं समझ पाते तब उसके स्वयं स्वरूपको समझनेके लिये तो किसी दिव्य स्वरूपके ज्ञानकी ही आवश्यकता है । दिव्य ज्ञानके द्वारा अक्षर ब्रह्मके स्वरूपको समझे बिना हमारे जप तप सब व्यर्थ हैं । इसीलिये शास्त्र कहते हैं ।

**नाना मार्गैस्तु दुष्प्राप्यं कैवल्यं परमं पदम् ।** ( गरुड़ पु० )
**तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति, नान्यःपन्था विद्यतेऽयनाय ॥**

**( यजु. अ. ३१ मं १८ )**

नाना मार्गोंमें भटकने वाले इस परम तत्त्व ब्रह्मरूप अक्षरको नहीं प्राप्त कर पाते । उस पुरुषरूप अविनाशी अक्षरको जानने वाले ही जन्म

मरणके बन्धनसे सदाके लिये बच जाते हैं किन्तु उसके स्वरूपको जाननेका एक ही मार्ग है। वह यह है कि किसी आत्मदर्शी गुरुकी शरणमें जाकर तारतम्य ज्ञानके द्वारा उस ब्रह्मके स्वरूपको समझें और उनके उपदेशानुसार उसे धारण कर अनुभव प्राप्त करें। सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्मको तारतम्यके द्वारा ही जाना जाता है। अन्य मार्गके द्वारा वह प्राप्त होना कठिन है। इसीलिये वेदने निषेध कर दिया है कि अन्यमार्ग नहीं है।

जिस अक्षर ब्रह्मको ब्रह्मविद्याके बीज रूप तारतम्य ज्ञानके द्वारा जाना जाता है अर्थात् जो ब्रह्म ब्रह्मविद्यैकगम्य है उसी अक्षरके चतुर्थविभूतिपाद अव्याकृतमें ही सम्पूर्ण विश्वोंका उदय लय सब देवता भी उसी चतुर्थपादमें एकीभावको प्राप्त होते हैं। यथा,

**सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति।( अथर्व कां १३-४-२०-२१ )**

**तद्विष्णो परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ( १-२-६-५ )**

चतुर्थपाद अव्याकृतमें पर विष्णुका परमपद है, जिसे ज्ञानीपुरुष जानते है। इसीको वैकुण्ठकी नित्य मुक्ति कहते हैं। और इस विश्वके अन्तर्गत सत्यलोकमें जो वैकुण्ठ कैलास आदि मुक्ति स्थल हैं वे तो सब अनित्य हैं। इसी अव्याकृत पुरुषके अन्तर्गत श्वेतद्वीप है जहां पर करोड़ो आत्मा हंसरूपसे निवास करते हैं इस श्वेतद्वीपके भी चार पाद हैं जिनमें अचिन्त्य पुरुष है। रमेति राम मूल पुरुष सतपुरुष अमरपुर आदि इसीको महात्मा पुरुषोंने अनेकों नामोंसे गाया है। यहांपर तृतीय पादमें चार द्वीपोंके हंस रहते हैं। इसी पादमें विष्णुपद है। द्वितीयपादमें प्रातिभासिक कृष्णकी लीला है। प्रथम पादमें रासलीला है। यह अव्याकृत चतुष्पाद होते हुए भी प्रकृति पुरुषके नामसे प्रसिद्ध है। इसीको गीतामें "प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादी उभावपि" इस श्लोकमें अनादि प्रतिपादन किया है। यद्यपि असंख्य विश्वोंका उदय लय इसीके द्वारा होता है। इसीके अन्तर्गत प्रणव ब्रह्मका स्थान है जो चतुर्थपादमें माना गया है प्रणवसे ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर और सदाशिव इन पांच देवोंका प्रादुर्भाव होता है। इन्हींको प्रणवकी पांच (अकार उकार मकार अर्धमात्रा और बिन्दुरूप) मात्रा कहते हैं।

**ब्रह्माविष्णुमहेशश्चा ईश्वरश्च सदाशिवः ।**
**पञ्चधा पञ्च दैवत्वं प्रणवःपरिपठ्यते ॥( श्रुतिः )**

इन्हीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ईश्वर और सदाशिवके विज्जृम्भण मात्रका नाम सृष्टि है। इन्हींके द्वारा रचे हुए जगतका नाम ब्रह्मांड है।

इस अव्याकृतके आगे सबल ब्रह्मका स्थान है। यह सबल ब्रह्म भी चतुष्पादविभूति है। जिस प्रकार विष्णुलोकमें साख्य मुक्तिको प्राप्त होनेवाले सभी जीवात्मा चतुर्भुज स्वरूप होते हैं। उसी प्रकार अक्षर ब्रह्मके चतुष्पा विभूति ऐश्वर्यमें सभी पाद पुनः चतुष्पाद ऐश्वर्य धारण करते हैं। इन एक–एक पादको असंख्य ऐश्वर्य अनेक प्रकारके आनन्द उन पादोंमें प्राप्त होने वाले मुक्त पुरुषोंको मिलते हैं।

सवल ब्रह्म जिसको सबलिक भी कहते हैं उसके चतुर्थपादमें अव्याकृतका वर्णन किया गया, इसी सबलके तृतीयपादमें चिदानन्द लहरीका स्थान है। चिद आनन्द धर्मका प्रातिभासिक संघात स्वरूप चिदानन्द लहरीके नामसे वर्णन किया गया है। इसका एक सुदिव्य धाम है जो एक सरोवर रूप सुधा सिंधुके मध्यमें है। यथा,

**सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपवाटीपरिवृते ।**
**मणिद्वीपेनीपोपवनवतीचिन्तामणि गृहे॥**

**शिवाकारे मंचे परमशिवपर्यंकनिलयाम् ।**
**भजन्ति त्वां धन्या कतिचन चिदानदलहरीम्॥**

**( सौदर्य लहरी )**

यह सुधाका सिंधु एक द्वीपको मध्यमें धारण किये है। जिसका नाम मणिद्वीप है। इसका पलग रूप सिंहासन भी पांच शिवोंके द्वारा बना है। यहां पर उन पांचों शिवोंका नाम मात्र भेद है। यह चिदानन्द लहरी क्या है ? इस विषयमें व्यासजीने पुराण संहितामें लिखा है यथा–

**चिदानन्दमयी सा हि सर्वकारणकारणम् ।**
**सा नित्यरूपा परमा नित्यसिद्धा निरामया॥**
**अक्षरान्तहृदाकाशरंगे ब्रह्मांडनाटकम् ।**

**रमयन्ती सूत्रधारमात्मानं स्वप्रकुर्वती ।**

**( पु० सं. अ. ११-३-४ )**

यह आनन्द लहरी अक्षरके हृदयरूप तृतीयपाद सबलिकमें विराजमान है। और अनेकों ब्रह्मांडोंकी रचना सुमंगलारूपसे करती है। इसका ऐश्वर्य अव्याकृतसे उत्कृष्ट है उसमें अनेक प्रकारसे आनन्द और अनेक लीलाओंका प्रतिभास है।

इसके आगे सबलिक ब्रह्मका द्वितीय पाद है, जहां पर गोलोकी कृष्णकी लीला और व्रजभूमिका आदिका अलौकिक वर्णन है। यद्यपि इस विश्वमें भी व्रजभूमि है किन्तु व्रज व्यवहारके लिये व्रज हैं वस्तुतः नहीं।

**गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं व्रज उच्यते ।**
**सदानन्दं परं ज्योतिर्मुक्तानां पदमव्ययम् ॥**

**तस्मिन्नन्दात्मजः कृष्णः सदाऽऽनन्दविग्रहः ।**
**आत्मारामश्चाप्तकामः प्रेमाक्तैरनुभूयते ॥**

**रहस्य त्विदमेतस्य प्रकृते परमुच्यते ।**
**प्रकृत्या खेलतस्तस्य लीलाऽन्यैरनुभूयते ॥**

**( स्कन्धपुराण )**

गुणोंसे पर होनेके कारण परमात्माको ब्रह्म कहते हैं और उसकी व्यापक सत्तावाला जो आनन्द स्थल है उसको व्रज कहा जाता है। उसी अपने आनन्द लोकमें नन्दात्मज श्री कृष्णजी सदा आनन्द स्वरूपसे विहार करते हैं। जहां पर कृष्णभक्तोंका मुक्तिधाम है। जिसे पूर्णकाम आत्मदर्शी ही जान पाते हैं। क्योंकि यह व्रजलीला प्रकृतिसे पर है। इसे सब नहीं जान पाते। सब लोग तो श्री कृष्णकी उस प्राकृत लीलाको ही समझ पाते हैं जो उन्होंने इस विश्वमें की है। अरे प्राकृत लीलामें भी व्यवहारिकी और वास्तवी भेद है। जिसे सब लोग नहीं जानते। यथा,

**सर्गस्थित्यप्ययया यत्र रजः सत्त्वतमो गुणैः ॥**
**लीलैवं द्विविधा तस्य वास्तवी व्यवहारिकी ॥**

**वास्तवी तत्स्वसंवेद्या जीवानां व्यावहारिकी ।।**
**आद्यां विना द्वितीया न द्वितीया नाद्यगा क्वचित् ।।**
**अस्मिन्नास्वाद्यमाने तु सच्चिदानन्दरूपिणी ।।**
**प्रकाशते हरेर्लीला सर्वतः कृष्ण एव च ।।**
**आत्मानं च तदन्तस्थं सर्वेपि ददृशुस्तदा ।।**

**( स्कन्ध पुराण )**

जिस हमारे विश्वमें रजोगुण तमोगुण तथा सत्वगुण द्वारा सब पदार्थोंकी रचना होती है यहां पर भी जो श्री कृष्णकी लीला है वह भी वास्तवी और न्यावहारिकी भेदसे दो प्रकारकी है। उनमेंसे वास्तवी लीलाके पात्र ही समझ पाते हैं और जीव कोटिके जो मनुष्य हैं वे व्यावहारिकी लीलाको ही सब कुछ मान लेते हैं। उन्हें वास्तवी कृष्णलीलाका पता नहीं लग पाता। कदाच कोई बतावे भी तो समझ नहीं आती। क्योंकि वे उस लीला रसके अधिकारी नहीं हैं। इस बातको गीतामें स्वमुखसे श्री कृष्णजीने भी कहा है। यथा,

**नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमाया समावृतः ।**

योग मायासे आवृत मेरे स्वरूपको सब लोग नहीं समझ सकते। यही कारण है कि श्री कृष्णकी त्रिधालीलाके भेदको बहुत थोड़े मनुष्यने समझ पाया। जब समझ नहीं सके तो ग्रहण किस प्रकार करते ?

उपरोक्त स्कन्ध पुराणके अवतरणसे दो बात सुतरां स्पष्ट जाती है। एक तो यह है कि श्री कृष्ण वास्तवीकी लीलाको कतिपय विद्वानोंके अतिरिक्त अन्य लोगोंने नहीं समझा। दूसरी बात यह कि श्री कृष्णकी ये दोनों लीला परस्पर सापेक्ष हैं विना वास्तवीके व्यावहारिकी लीलाको पूर्णतया नहीं जान सकते और व्यावहारिकी लीलाके बिना वास्तवी लीलाके स्वरूपको अवगत नहीं किया जा सकता। इतना ही नहीं प्रत्युत इन दोनों लीला भेदको सम्पूर्ण तया समझ लेनेसे एक तीसरी वास्तवी लीलाका सर्वत्र प्रकाश होने लगता है जो सच्चिदानन्द स्वरूपात्मिका है और जिससे अपने स्वरूपका तथा सच्चिदानन्द ब्रह्मके स्वरूपमें जो कुछ भी गुप्त तत्व है उसका भी दर्शन हो

जाता है । जिस सच्चिदानन्द रूपिणी लीलाका वर्णन ऊपर किया गया है वह अक्षर ब्रह्मसे पर अक्षरातीत ब्रह्मके धाममें सदा सर्वदा अखण्ड वर्तमान है ।

सबलिक ब्रह्मके प्रथम पादमें नित्य गोलोककी लीला तथा वहाँकी नित्यमुक्तिका वर्णन है जो नाम मात्र यहां वर्णन करते हैं । इस लोकमें अनेक वनोपवन हैं जहां पर सौ सौ कोटी शक्तियोंके समूह विराजते हैं तो कहीं साढ़े तीन करोड़ सखीवृन्द है तो इच्छा पूर्ण करनेवाले वृक्ष, नदीं, सरोवर, फलफूल अनन्त सामग्री विद्यमान हैं ।

इस सबलिक ब्रह्मके आगे केवल धाम है जहां पर केवल ब्रह्मके रसस्वरूप द्वारा नाना प्रकारकी नवरसात्मक लीलाएँ हैं । इस केवल धाममें नव रसके नव खण्ड हैं जिनमें पृथक–पृथक रस तथा पृथक प्रकारके विभावानुभाव हैं, जिनके द्वारा नाना प्रकारके रसोंकी अभिव्यक्ति होती है । यहां पर ब्रह्मकी केवल रसानन्द लीलाकी अभिव्यक्ति प्रधानतया होती है अतः इस धामको केवल धाम कहते हैं । इसी केवल ब्रह्मकी शक्ति महा योगमाया है जिसके अन्तर्गत महारास सदा सर्वदा अखण्ड है । इस नश्वर विश्वमें जो रासलीलाका वर्णन है वह सारा इसी महारासके प्रातिभासिक रूपके प्रतिबिम्बका वर्णन है ।

**गुणतीतं तु तद्धाम सुन्दरं सर्व दुर्लभं ।**
**युगलं क्रीड़ते तत्र निजधाम्नि सुखास्पदे ॥**

**गमनं श्रूयते यत्रागमनं चा न वा प्रभो ।**
**किन्तु धाम परं गुह्यं रहस्यं देव दुर्लभम् ॥**

इस धामको गुणातीत वर्णन किया है यहां पर श्री कृष्ण और श्यामा युगल स्वरूप विराजे हैं । यह सुख धाम नित्य सुखको देनेवाला है यहां पर रासलीलाके कृष्ण स्वरूपको तत्त्वतः जान कर भजनेवाले आत्मा मोक्ष सुखका अनुभव करते हैं । यहांसे पुनरावृति नहीं होती । यहांकी रसमयी लीलाका वर्णन श्री परमधामकी ब्रह्मलीलासे मिलता जुलता है । इसके आगे सत्स्वरूपके धाम ऐश्वर्यका मोक्षधाम है । यहाँ पर मुक्तात्माओंको ब्रह्मानन्दलीला

रसका आस्वाद इच्छाधारी रूपसे होता है और परमधामका साही आनन्द प्रतीत होता है। यह सत्स्वरूप भी चतुष्पाद है इसका चतुर्थपाद ही केवल ब्रह्म कहा जाता है। ब्रह्मसृष्टिने जिन उत्तम जीवोंके स्वरूपमें होकर इस मिथ्या जगतको देखा है और अपनी इच्छा पूर्ण की है उन सब जीवोंको इस सतस्वरूपके प्रथम पादमें मोक्ष सुख प्राप्त होगा।

प्रेमी पाठक! इस प्रकार चतुष्पाद विभूतिका वर्णन श्रुति और स्मृतियोंके अन्दर बहुत विस्तारके साथ किया है जिसे यहां नाम मात्र संकेत किया है। यह चतुष्पाद विभूति ऐश्वर्य अपने अपनेमें मिल कर सोलहपाद हो जाता है जैसे क्षर (नश्वर विश्व) पुरुषमें सोलह कला हैं उसी प्रकार अक्षरब्रह्में १६ पाद हैं जो अव्याकृत सबलिक केवल और सत्स्वरूप इन चार पादोंके नामसे प्रसिद्ध होनेके कारण चतुष्पाद ब्रह्म भी कहा जाता है। इस चतुष्पादमेंसे तीन पादका विभूति ऐश्वर्य नित्य सुखको देनेवाला है और चतुर्थपाद अव्याकृतमें नित्य और अनित्य दोनों प्रकारका सुख प्राप्त होता है। जब अव्यक्त दशामें रहता है तब तो इसका सुख भी नित्य रहता है लेकिन जब इस पादकी विभूति अव्यक्तरूपमें एकोऽहंबहुस्याम् की कल्पना कर बहुतरूपमें व्यक्त हो जाता है तब इस पादका जो भाग स्थूल सूक्ष्म कारणरूपमें उदय पा जाता है जो भाग अव्यक्त बना रहता है उस भागमें जीवात्मा जो उसको प्राप्त होता है, आनन्दका अनुभव करता हुआ अजर अमर बना रहता है।

अव प्रश्न केवल यह उठता है कि जब अक्षरब्रह्मके विभूतिपादोंमें भी मोक्ष सुख किंवा नित्यानन्द प्राप्त होता है और पुनरावृत्ति नहीं होती तब अक्षर ब्रह्मको इससे भी महान पुरुष कहना और उससे भी पर पुरुषोत्तम अक्षरातीत ब्रह्मके परमधामको और भी विशिष्ट महत्व प्रदान करना इसमें विशेषता क्या ?

इसके उत्तरमें संक्षेपमें यही कहा जा सकता है कि जिस प्रकारसे मृत्युलोकमें भी नाना प्रकारके सुख है और वे सापेक्ष हैं उसी प्रकार इन विभूति पादोंके सुख नित्य होते हुए भी परस्पर सापेक्ष हैं और इनमें अपेक्षाकृत गौरव लाघव भी है। यथा,

**वैष्णवानन्दशतकं रुद्रानन्दस्तु चोच्यते ॥**

**रुद्रानन्दशतेनोक्तः शैवानन्दपरोमहान् ।**

**शिवानन्दशतेनोक्त ईश्वरानन्दसंज्ञकः ॥**

**तच्छतेन भवेद्देवि प्रकृत्यानन्द उत्तमः ॥**

**प्रकृत्यानन्दशतकं अक्षरानन्द उच्यते ॥**

मृत्युलोकके सैकड़ो आनन्दकी बराबर स्वर्गका एक ही आनन्द होता है । इसी प्रकार स्वर्गके सैकड़ो आनन्दोंको विष्णुलोकका एक ही आनन्द तुच्छ बना देनेमें समर्थ बनता है । एवं इसी प्रकार विष्णुके सौ आनन्द तो रुद्रका एक आनन्द । रुद्रके शत आनन्द तो ईश्वरका एक ही आनन्द बराबर है । और ईश्वरके सौ आनन्दके बराबर प्रकृतिका एक आनन्द होता है । प्रकृतिके सौ आनन्द पुरुषके एक आनन्द समझें । इस प्रकारसे अक्षर की चतुष्पाद विभूतिके ऐश्वर्य और आनन्द परस्पर उत्तरोत्तर अधिक महत्वपूर्ण होते जाते हैं । और अक्षर ब्रह्मके इन चतुष्पादोमें प्रातिभासिक आनन्द होनेके कारण गणितानन्द है और पूर्णात्पूर्ण श्री अक्षरातीत ब्रह्मका जो ब्रह्मानन्द है वह तो असीम है । सबकी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है एवं निरपेक्ष है । चतुष्पादविभूतिका जो आनन्द है वह अक्षर अक्षरातीत की अपेक्षा रखता है और पूर्णब्रह्मके द्वारा ही पूर्ण है । परन्तु परमधामका आनन्द स्वतन्त्र स्वयं प्रकाश्य और पूर्णात्पूर्ण है । इसीलिये श्रुति कहती है कि,

**पूर्णस्य पूर्णामादाय पूर्णमेवावशिष्यते** उस पूर्णसे चाहे जितना पूर्णानन्द आप ग्रहण करें, चाहे उस पूर्णसे चाहे जितनी लीला सामग्री बढ़ा लें किन्तु वह तो सर्वकाल सब प्रकारसे पूर्ण ही रहता है ।

वाचकवृन्द ! यह है अक्षर ब्रह्मका महत्त्व जिसे जानकर ही मनुष्य कृतार्थ होता है । इसीको विना जाने जो जाता है वह कृपण है और उसके जप तप होमादि सब महत्त्वपूर्ण नहीं होते । जो अक्षरके स्वरूपको तत्त्वतः जान लेता है वह जो कुछ भी इच्छा करता है यह लोकमें उसे सब कुछ प्राप्त होता है । यह सब अक्षरब्रह्मकी महिमा है जो यहां पर बहुत संक्षेपमें लिखी गई है ।

# श्री कृष्ण प्रणामी धर्मके कुछ मन्तव्य:

१) परमात्मा एक हैं । वे क्षर अक्षरसे परे होनेसे अक्षरातीत कहलाते हैं । उनका स्वरूप साकार तथा निराकारकी सीमामें सीमित नहीं अपितु शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप है । उनको पूर्णब्रह्म, परब्रह्म, उत्तमपुरुष, परमपुरुष, परमसत्य आदि अनेक रूपमें उल्लेख किया है ।

२) पूर्णब्रह्म परमात्माके अङ्गस्वरूप अक्षरब्रह्मके द्वारा पलमात्रमें अनेक ब्रह्माण्डोंकी सृष्टि, स्थिति तथा लय होता है । सृष्टि होने पर प्रत्येक ब्रह्माण्डोंका सञ्चालन भगवान नारायणको सौंपा जाता है । वे स्वयं अक्षरब्रह्मके स्वप्न स्वरूप कहलाते हैं । प्रत्येक ब्रह्माण्डमें चौदह लोक होते हैं । भगवान नारायण स्वयं ब्रह्मा बनकर इन लोकोंमें प्राणियोंकी सृष्टि करते हैं, भगवान शङ्कर बनकर उनका संहार करते हैं । पालन पोषणका कार्य भगवान विष्णुका होनेसे उनको इस जगतमें वारंवार आना पड़ता है । एक बारकी सृष्टिमें उनको चौबीस बार आना होता है । वैकुण्ठधाम अर्थात् सत लोकसे मृत्युलोकमें उनके आगमनको अवतार कहा जाता है । इस प्रकार एक बारकी सृष्टिमें भगवान विष्णुके चौबीस अवतार होते हैं ।

३) ब्रह्माजी,भगवान विष्णु तथा भगवान शङ्करको सृष्टि, स्थिति तथा लयमें सहयोग पहुँचानेके लिए तैतीस कोटि देवी-देवताएँ हैं । वे स्वंर्गमें रहकर उनकी आज्ञाका अनुपालन करते हैं । उनको अलग अलग विभाग सौंपा गया है । इसलिए सामान्य मनुष्योंको भी इन देवी-देवताओंकी शक्ति तथा सहयोगकी जानकारी होती है इसलिए वे इनको ही परमात्माके रूपमें मानते हैं ।

४) तत्त्वचिन्तक महापुरुषोंने देवी-देवताओं, अवतारी पुरुषों, ब्रह्मा, विष्णु, महेश जैसे त्रिदेव तथा भगवान नारायणकी स्थितिका स्पष्ट उल्लेख करते हुए कहा है कि वे उत्तरोत्तर महान हैं तथापि उनकी शक्ति इस जगतमें ही कार्यरत है इसलिए उनकी उपासना, पूजा अथवा भक्तिसे नश्वर जगत तथा स्वर्गादि लोकोंके सुखोंकी ही प्राप्ति हो सकती है, जिनको अखण्ड सुख नहीं माना जाता है ।

५) परमसुख अथवा अखण्ड मुक्ति तो क्षर (नश्वर) ब्रह्माण्डसे पर अक्षर तथा अक्षरसे भी पर अक्षरातीत पूर्णब्रह्म परमात्माकी भक्ति तथा उपासनासे ही प्राप्त हो सकती है । इसलिए पूर्णब्रह्म परमात्माकी ही उपासना, पूजा तथा भक्ति करनी

चाहिए, यही सर्वश्रेष्ठ उपाय है ।

६) सभी देवी–देवता, अवतार तथा त्रिदेव आदरणीय हैं इतना ही नहीं इस नश्वर जगतमें भी जितने महापुरुष तथा भक्तजन हुए हैं वे सभी आदरणीय हैं किन्तु यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अपनी आत्माका सम्बन्ध उन सभीसे परे पूर्णब्रह्म परमात्माके साथ है जो सभी देवी–देवताओं, अवतारों तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं भगवान नारायणके भी स्वामी हैं ।

७) ऐसे पूर्णब्रह्म परमात्माकी भक्ति अनन्य प्रेमभावसे की जाती है इसलिए सगुण (नवधा) भक्ति तथा निर्गुण भक्ति (अष्टाङ्गयोग) से भी उत्तम भक्ति परा प्रेमलक्षणा भक्ति कहलाती है । इस जगतमें अनेक भक्तोंने प्रेमलक्षणा भक्तिके द्वारा परब्रह्म परमात्माकी आराधना की है । उनमें व्रजमण्डलकी गोपियोंका स्थान सर्वोच्च माना गया है ।

८) चौरासी लाख योनियोंमें मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ है । किन्तु मनुष्य योनिमें आने पर भी यदि प्रेमलक्षणा भक्तिके द्वारा परब्रह्म परमात्माकी उपासना न की जाए अथवा इस प्रकारकी समझ या ज्ञान न किया जाए तो मनुष्य जीवनको निष्फल मानना चाहिए ।

९) इसलिए किसी भी मनुष्यको ज्ञान प्राप्त करना हो तो उसे पूर्णब्रह्म परमात्माका ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, यदि वह भक्ति करता हो तो उसे उन्हीं परमात्माकी भक्ति करनी चाहिए । ज्ञान अथवा भक्ति दोनोंसे ही परब्रह्म परमात्माकी अनुभूति हो सकती है किन्तु ध्यान रहे कि परमात्माका अनुभव आत्मा ही कर सकती है । इसके लिए मन, बुद्धि, चित्त तथा अहङ्कार इन चारों अन्तःकरणको शुद्ध करना आवश्यक है । अन्तःकरणकी शुद्धि ही साधना है भले वह ज्ञानसे हो या भक्ति (प्रेम) से ।

१०) मनुष्यको मनुष्य बनानेके लिए धर्म सर्वप्रथम उत्तम संस्कारोंका सिञ्चन करता है, लोकव्यवहारका ज्ञान देता है जिससे शनैः शनैः अन्तःकरणमें शुद्धता आती है । इसीको जीवनका अभ्युदय कहा है । तदुपरान्त धर्मका दूसरा कार्य स्वस्वरूपकी अनुभूति अर्थात् आत्मज्ञानका मार्ग निर्दिष्ट करना है । आत्माके अनुभव होने पर ही परमात्माका अनुभव हो सकता है । इसलिए श्री कृष्ण प्रणामी धर्ममें सर्वप्रथम अन्तःकरणकी पवित्रताकी बात की गई है । अन्तःकरणके पवित्र होने पर निजानन्द तथा ब्रह्मानन्दका अनुभव हो सकता है । यही जीवनका मुख्य ध्येय है ।

# मनन करनेयोग्य

## त्यागी कौन ?

बहुत बड़े धनी और विद्वान् जमींदारकी एक बार किसी महात्मासे भेंट हो गयी। महात्मा बड़े त्यागी थे। जमींदारने उन्हें एक लँगोंटीका कपड़ा देना चाहा, परंतु उन्होंने आवश्यकता न होनेसे स्वीकार नहीं किया। कुछ समयतक साधु–संग करनेपर जमींदारके मनमें भी वैराग्यका भाव आया और उसे त्यागकी महत्ता दिखायी दी। इसपर उसने महात्मासे कहा, स्वीमीजी महाराज ! आपको और आपके त्यागको धन्य है।

महात्माने बहुत विनयके साथ मधुर शब्दोंमें कहा, भाई ! बेसमझ लोग मुझे भले ही त्यागी कहकर मेरी प्रशंसा करें, असलमें मैं तो बड़ा ही स्वार्थी हूँ। तुम्हारे सरीखा सुशिक्षित पुरुष मुझे त्यागी कैसे बता सकता है ? मैं तो सदा रहनेवाले सर्वोपरि अमूल्य धनकी चाह करता हूँ और उसके लिये मैंने नगण्य विनाशी वस्तुओंको छोड़ा है। वस्तुतः त्यागी तो तुम हो जो उस असली धनको जाननेपर भी उसको ही छोड़ देते हो।

## विवेक :

पहले इंग्लैंडमें लोग तरवार बाँधे घूमा करते थे। द्वन्द्व युद्धसे इनकार करना वहाँ बहुत बड़ी कायरता समझी जाती थी। एक दिन किसी नवयुवकने बहादुरीका बीड़ा उठाकर महारानी एलिजाबेथके विशेष सम्मानपात्र सर वाल्टर रेलेको द्वन्द्व युद्धके लिये ललकारा। सर वाल्टर रेलेने अस्वीकार कर दिया। तब उस असभ्य नवयुवकने निन्दा करके उनके मुँहपर थूक दिया। तलवार चलानेमें अत्यन्त निपुण सर वाल्टर रेलेने इस प्रकार अपमानित होनेपर भी धीरजके साथ कहा, मैं अपने मुँहपर रूमाल फिराकर जिस आसानीसे तुम्हारा थूक पोंछ सकता हूँ, उतनी ही आसानीसे तुम्हारी छातीमें लगे हुए तलवारके घावको पोंछ सकता हूँ अथवा बिना कारण ही नर–हत्या करनेके पापसे बचनेका कोई उपाय होता तो मैं अभी तुम्हारे साथ तलवार लेकर लड़नेको तैयार हो जाता।

**संकलन : श्री योगेन्द्र उप्रेति – श्री ५ नवतनपुरी धाम, जामनगर**

# श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महोत्सव – शामलाजी

## श्री तारतम सागरके १०८ पारायण तथा १०८ राजभोग

सुन्दरसाथजी, हमें ज्ञात ही है कि श्री ५ नवतनपुरी धाम, खीजडा मंदिर ट्रस्ट द्वारा शामलाजी (सा.कां) में ई.स २००५ में श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रमका निर्माण किया है। प्राकृतिक सौन्दर्यसे ओतप्रोत अरबल्ली पर्वतमालाओंकी स्नेही गोदमें स्थित शामलाजी गुजरातके पाँच सर्वोपरि तीर्थस्थानोंमेंसे एक है। जो करोडों भक्तात्माओंकी श्रद्धा एवं आस्थाका केन्द्र बिन्दु है। यहाँपर अन्दाजित ५ हजार वर्ष पौराणिक भव्य एवं दिव्य मन्दिर है जो सुन्दर रूपसे सुशोभित है गुजरातका यह अद्वितीय तीर्थ क्षेत्र है।

मेश्व सरोबरका शीतल स्वच्छ जलस्पर्शित तथा वनवाटिकाओंमें पुष्पित पुष्पोंको स्पर्श कर वहती हुई शीतल मन्द सुगन्धयुक्त हवा जहाँ भक्तोंको तरोताजा करती है वहीं ऐसी पावनतम पौराणिक तीर्थभूमि भक्तोंके हृदयको भक्तिके अमिट रंगोंसे रंगाती है।

ऐसी भूमिमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्मका प्रचार–प्रसार द्रुत गतिसे हो एवं महामति श्री प्राणनाथजीकी विश्व विमोहिनी, विश्व कल्याणकारी वाणी श्री तारतम सागरका ज्ञान समग्र मानस पटलपर प्रस्थापित हो इस हेतुसे **श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज**ने यहाँ पर एक विशिष्ट मंदिर निर्माणका संकल्प लिया है। यहाँ पर पातालसे परमधाम पर्यन्तकी अलभ्य झाकियाँ भी लगेंगी। जिनके द्वारा शास्त्रोंके गूढ़ रहस्यात्मक ज्ञान सर्वसाधारण भगवद्भक्तोंको भी सुलभतासे प्राप्त होगा।

पांच वर्ष पूर्व स्थापित श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रम सुचारु ढंगसे संचालन हो रहा है। यहाँ पर प्रति वर्ष परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी पावन निश्रामें

वार्षिक उत्सव बहुत ही सुन्दर ढंगसे मनाया जाता है। इस वर्ष यह उत्सव श्री तारतम सागरके १०८ पारायण तथा १०८ राजभोगके भव्य आयोजनके साथ दिनांक २३ अक्तूबर से २८ अक्तूबर २००९ पर्यन्त भव्य रूपसे मनाया गया।

**शोभायात्रा :** दिनांक २३ अक्तूबर २००९ को प्रातः १०.०० बजे शामलाजी विष्णु मंदिर ट्रस्ट संचालित श्री प्रकाश यात्री भवनसे शोभा यात्राका मंगल प्रारंभ हुआ। हजारों सुन्दरसाथ एवं विभिन्न स्थानोंसे पधारे सन्त सम्मिलित इस यात्राके केन्द्रबिन्दुमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्री थे जो श्रृंगारयुक्त विशाल रथमें सुशोभित थे।

बेन्ड बाजा एवं साउड सिस्टमके तालमें झुमते हुए अनेक प्रकारके रास एवं गरबाका आनन्द लेकर सुन्दरसाथजी अपने आपको धन्यभागी समझ रहे थे। श्री कृष्ण कन्हैया लालकी जय, श्री निजानन्द स्वामीकी–जय, श्री प्राणनाथ प्यारेकी–जय एवं श्री कृष्णमणिजी महाराजकी–जय इस प्रकारकी जय जय कारसे गगनको गुंजायमान करते हुए शोभायात्रा ठीक १२ बजे मन्दिर प्रांगण

पर पहुँची। वहाँपर परम पूज्य महाराजश्रीने सभीको आशीर्वाद दिया। इस प्रकार करीबन २ घण्टेकी शोभायात्राका सभीने आनन्द लिया।

**पारायण प्रारंभ :** शोभायात्रा पश्चात् सभी सुन्दरसाथ एवं सन्तजन

सुन्दर रूपसे सुसज्जित पारायण मण्डपमें पहुँच गये। जहाँ पर श्री राजजीके

बाङ्मय स्वरूप १०८ श्री तारतम सागर शोभायमान थे। प्रारम्भिक पूजन एवं आरती पश्चात् मध्याह्न ठीक १२.३० बजे **परम पूज्य आचार्य महाराजश्री**ने श्री १०८ पारायणका सुन्दर शुभारम्भ किया। उक्त अवसर पर **श्री टहलकिशोर शास्त्रीजी महाराज, शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्यजी, श्री नारायण स्वामीजी, श्री पुरुषोत्तम शास्त्रीजी, श्री चन्दन शास्त्रीजी, श्री कृष्ण शास्त्रीजी** एवं पारायणके मुख्य यजमान तथा अग्रणी सुन्दरसाथकी सुन्दर उपस्थिति थी।

**भूमि पूजन :** दिनांक २३ अक्तूबर २००९ को मध्याह्न ठीक १.०० बजेके शुभ मुहूर्तमें अनेक संतजन एवं अग्रगण्य सुन्दरसाथकी विशेष उपस्थितिमें श्री राजजी महाराजकी स्तुति एवं मंगलाचरणके पश्चात् परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके पावन कर कमलों द्वारा भूमि पूजन हुआ । उपरोक्त पावन अवसरमें मन्दिर निर्माणार्थ विशेष सहयोग प्रदान करनेवाले सेवाभावी सुन्दरसाथकी भी उपस्थिति थी ।

**सभामंडप :** अपराह्न ठीक ३.०० बजे परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने

दीप प्रज्वलन कर सभाका मंगल उद्‌घाटन किया । सर्वप्रथम भजन एवं स्तुति गायन पश्चात् **परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री तारतम सागरकी चरचा कर उपस्थित संतो एवं सुन्दरसाथको आशीर्वाद प्रदान किया ।** प्रतिदिन पूज्य आचार्य महाराजश्री वाणी चर्चा कर सुन्दरसाथको लाभान्वित करते थे । सभाको सम्बोधित करनेवाले संतोंमें विशेष कर **: श्री नारायण स्वामीजी, शास्त्री लक्ष्मण चैतन्यजी, श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्रीजी, श्री राजेन्द्र शास्त्रीजी, श्री कृष्ण शास्त्रीजी, श्री चन्दन शास्त्रीजी, श्री कपिल शास्त्री** आदि थे तो भजन गायनमें **श्री राजीव लोचनजी** एवं **सुनिलजी** थे ।

**राजभोग :** दिनांक २८ अक्तूबर २००९ प्रातः ११.०० बजे श्री राजजीके लिए भिन्न भिन्न १०८ प्रकारके सुस्वादिष्ट मेवा मिष्टान्नयुक्त राजभोगका सुन्दर आयोजन

किया। ठीक ११ बजे पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी उपस्थितिमें सुन्दरसाथने खुब प्रेम एवं भावपूर्वक श्रीराजजीको १०८ राजभोग लगाया। श्री राजजीको भोग लगनेके पश्चात् सर्वप्रथम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने प्रसाद ग्रहण किया तदनन्दर उपस्थित सभी सुन्दरसाथने उस प्रसादको पाकर अपने आपको पावन बनाया।

**श्रीमद्भागवत कथा :** प्रतिदिन अपराह्न ३ से ६ बजे पर्यन्त सुन्दरसाथने

श्रीमद्भागवत भागीरथीमें अवगाहन किया। श्री कृष्ण प्रणामी सेवाश्रम-शामलाजीके संचालक **श्री पुरुषोत्तम शास्त्रीजी**ने सरल शैली द्वारा कथाका रसपान सुन्दरसाथको कराया।

**सांस्कृतिक कार्यक्रम :** आश्रमके निकटवर्ति ग्रामोंके उत्साही सुन्दरसाथने वीतक आधारित नाटक तैयार कर रात्रिकालीन सभामें सुन्दरसाथके आगे प्रस्तुत किया। अलग अलग ग्रामों द्वारा प्रस्तुत रास एवं गरबा भी खुब प्रशंसनीय रहे। जागरणकी पूरी रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सामूहिक रासमें व्यतीत हुई।

**पूर्णाहुति :** दिनांक २९ अक्तूबर २००९ प्रातः ९.०० बजे हजारों

सुन्दरसाथकी उपस्थितिमें परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीने श्री तारतम सागरके अन्तिम दो प्रकरणोंका पाठ कर पारायणका समापन किया। पूज्य आचार्य महाराजश्रीके मुखारविन्दसे समापनकी चौपाई निकलते ही सुन्दरसाथने उच्च स्वरमें जय घोष करते हुए नारियल फोड़ कर वधाई देते हुए खुशियाँ मनाई। अन्तमें पूज्य आचार्य महाराजश्रीने उपस्थित संतों एवं सुन्दरसाथको सम्बोधन करते हुए सभीको आशीर्वाद प्रदान किया।

**पू.आचार्य महाराजश्रीका आशीर्वाद :** अन्तमें श्री राजजीकी असीम अनुकम्पा एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वाद लेकर जिन्होंने खूब उत्साह एवं उमंग पूर्वक रातदिन एक कर गाँव–गाँवमें जाकर महोत्सवकी पूर्व तैयारी की एवं समापन पर्यन्त अथक परिश्रम किया ऐसे आश्रमके संचालक श्री पुरुषोत्तम शास्त्री, मन्दिर निर्माणार्थ आर्थिक सेवा प्रदान करने वाले दाताओं एवं महोत्सवके विभिन्न विभाग जैसे, आवास विभाग, रसोई विभाग, पारायण विभाग, काउन्टर विभाग, सरसफाई विभागादिमें जिन्होंने निष्ठा एवं आस्था पूर्वक सेवा की ऐसे सभी सुन्दरसाथको पूज्य आचार्य महाराजश्रीने शाल ओढ़ाकर ढेर सारा आशीर्वाद प्रदान कर धन्य बनाया।

इस प्रकार यह महोत्सव श्री राजजीकी असीम कृपा एवं पूज्य आचार्य महाराजश्रीकी पावनोत्तम निश्रा एवं आशीर्वादसे भव्य एवं सुन्दर ढंगसे पूर्ण हुआ। अन्तमें सभी सुन्दसाथने भोजन प्रसाद ग्रहण कर स्व–स्वस्थान प्रस्थान किया।

– **संपादक**

# वार्षिकोत्सव-भिवानी

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, भिवानीका २८ वां वार्षिकोत्सव श्री तारतम सागर कथा, श्रीमद्भागवत कथा, राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, मंगल जयंती तथा सामूहिक विवाह जैसे विविध कार्यक्रमोंके साथ बहुत ही सुन्दर रूपसे सम्पन्न हुआ। **श्री राधिकादासजी महाराजकी** अध्यक्षतामें आयोजित इस कार्यक्रममें **श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज, संतशिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज, श्री जगतराजजी महाराज, श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज, श्री टहलकिशोरजी महाराज** लगायत समाजके शीर्षस्थ सन्तजन, विद्वद्जन एवं संगीतज्ञोंकी सुन्दर उपस्थिति थी। सभी संत गुरुजनोंने उपस्थित सुन्दरसाथको सम्बोधन करते हुए धर्मका मर्म व सिद्धान्त समझाया।

# अन्तर्राष्ट्रीय शरद पूर्णिमा महोत्सव २००९

श्री ५ पद्मावती पुरी धाम, पन्नामें प्रति वर्षकी भांति इस वर्ष भी २८ सितम्बर से ९ अक्तूबर २००९ पर्यन्त भव्य रूपसे अन्तर्राष्ट्रीय शरद पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। ट्रस्ट बोर्डके अध्यक्ष संत शिरोमणि श्री सदानन्दजी महाराज एवं धर्मगुरु श्री चेतनदत्तजीकी अध्यक्षतामें आयोजित महोत्सवमें समाजके लब्ध प्रतिष्ठित सन्तजन एवं विद्वद्जनोंके अलावा हजारोंकी संख्यामें सुन्दरसाथकी उपस्थिति रही।

इस महोत्सवमें तलवार भेंट, शोभायात्रा, श्री तारतम सागरके १०८ साप्ताहिक पारायण, बंगलाजीसे रास मंडल पर्यन्तकी श्री राजजीकी सवारी, रात्रि कालीन सभा मंच, रास गरबा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे विविध मनोरञ्जनात्म एवं आत्मरञ्जनात्मक कार्यक्रमोंका विशेष आकर्षण था।

इस अवसरपर सद्गुरु मन्दिरमें कलश स्थापना एवं ब्रह्मलीन गुरुजी श्री मंगलदासजीकी स्मृतिके उपलक्ष्यमें श्री तारतम सागरके १०८ साप्ताहिक पारायणका पावन आयोजन किया गया था। दिनांक २ अक्तूबर २००९ को प्रातः **पारायणका मंगल प्रारंभ श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराजने किया।** उक्त अवसर पर समाजके उच्चतम सन्तजन, विद्वद्जन एवं बड़ी भारी संख्यामें सुन्दरसाथकी उपस्थिति थी।

प्रतिदिन **सन्त शिरोमणि स्वामी श्री सदानन्दजी महाराज द्वारा श्रीमद्भागवत कथा एवं श्री मोहनप्रियाचार्यजी महाराज द्वारा वीतक कथा हुई ।** साथमें आचार्यजन एवं सन्तगुरुजनों द्वारा समयानुकूल कथा-प्रचन एवं भजन संध्याका सुन्दर आयोजन था । जिसमें भाग लेकर सभी सुन्दरसाथने धर्म लाभ प्राप्त किया ।

**-संपादक**

# श्री प्राणनाथ प्राकट्य उत्सव - बोरीवली मुंबई

वाणी सम्राट ब्रह्मलीन परमपूज्य बाबाजी श्री लक्ष्मीदासजी महाराज श्री ५ नवतनपुरी धामकी स्वच्छ प्रेरणा और पावन करकमलों द्वारा बोरीवली (पश्चिम) में दिनांक ३ मई १९९२ के दिन श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्रकी स्थापना हुई थी । वहाँ पर परम पूज्य बाबाजीने वाणी आचार्य श्री दीनदयालजी महाराजको अध्यक्ष पद पर नियुक्त कर वाणी प्रचारका दायित्व सौंपा था । पूज्य बाबाजी द्वारा सौंपा इस महान कार्यको वाणी आचार्य श्री दीनदयालदासजी महाराजने बखुबी निभाते हुए सुन्दरसाथकी सेवा की ।

समस्त सुन्दरसाथजीको सूचित करते हुए अपार आनन्दका अनुभव हो रहा है कि इस वर्ष श्री प्राणनाथ प्राक्टयोत्सवके सुअवसर पर यहाँपर विशेष त्रि-दिवसीय कार्यक्रमका आयोजन हुआ । यह उत्सव श्री प्राणनाथ ज्ञानकेन्द्रसे जुड़े सुन्दरसाथके लिए विलक्षण था । दिनांक १५ से १७ सितम्बर पर्यन्त आयोजित इस उत्सवमें विशेष कर श्री तारतम सागरका एक अखण्ड पारायण, शोभायात्रा, वाणी चर्चा, सत्संग, भजन-कीर्तन एवं वीतक आधारित नाटकादि कार्यक्रमोंका सुन्दर आयोजन था ।

**विशेष :** सुन्दरसाथकी भावना एवं आवश्यकताको ध्यानमें रखते हुए श्री दीनदयालजी महाराजने इसी अवसर पर कु.परीम सखीकी श्री तारतम सागरकी तालीम पूर्णाहुति कर उन्हें उपस्थित सुन्दरसाथके मध्य चादर ओढ़ाकर अपना उत्तराधिकारी बनाया । सभी सुन्दसाथने भी हर्षोल्लास पूर्वक उनको ज्ञान केन्द्रके उत्तराधिकारीके रूपमें स्वीकार किया ।

इस प्रकार विविध कार्यक्रमोंके साथ आयोजित यह उत्सव बोरीवलीके सुन्दरसाथके लिए एक अनुपम उत्सव रहा । सभीने हृदय सभर उत्सवमें भाग लिया ।

**सुश्री गीतांजली चौबे-बोरीवली, मुंबई**

# समाजका गौरव

श्री १०८ प्राणनाथजी मंदिर ट्रस्टके पूर्व सचिव श्री मनोजकुमार शर्माकी सुपुत्री कु.ऋचा शर्माको महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा राष्ट्रपति भवन नई दिल्लीके एक विशाल समारोहमें पुरस्कृत किया गया । कु. ऋचा इससे पूर्व भी राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत की जा चुकी है, यह समस्त प्रणामी समाजके लिए गौरवका विषय है ।

कु.ऋचाको उनकी उपलब्धि पर श्री ५ पद्मावती पुरी धाम पन्ना (म.प्र) में आयोजित अन्तर्राष्ट्रिय शरद पूर्णिमा महोत्सवमें श्री कृष्ण प्रणामी धर्माचार्य जगद्गुरु आचार्य श्री १०८ कृष्णमणिजी महाराज एवं समाजके विशिष्ट सन्त गुरुजनोंने आशीर्वाद प्रदान किया ।

श्री ५ नवतनपुरी धाम एवं परम पूज्य आचार्य महाराजश्रीका आशीर्वाद सह श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिका परिवारकी ओरसे उनको खुब खुब वधाई ।

– संपादक

# धामगमन

श्री ५ नवतनपुरी धाममें रहकर वर्षोंसे श्री प्राणनाथ मेडी मंदिरमें पुजारीके रूपमें सेवा करने वाले वयोवृद्ध संत श्री मोहनदासजी (मेडी पुजारी) का दिनांक ९ अक्तूबर २००९ के दिन धामगमन हुआ। दिनांक १० अक्तूबरके दिन श्री ५ नवतनपुरी धाममें उनकी श्रद्धाञ्जली सभा रखी गई थी। पू.आचार्य महाराजश्री, संतजन एवं उपस्थित सुन्दरसाथने उन्हें श्रद्धाञ्जली दी। दिनांक २५ अक्तूबरके दिन उनके नाम पर श्री तारतम सागरका एक दिवसीय पारायण कर मंदिरमें पक्की रसोईकी सेवा दी गई। जिन्होंने सेवाको ही धर्म मानकर संपूर्ण जीवन सेवामय व्यतीत किया है ऐसे सेवाभावी संतको श्री राजजी अपने चरणोंका सुख प्रदान करें ऐसी प्रार्थना ।

## अस्ट्रेलियामें सत्संग

श्री ५ नवतनपुरी धाम द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त श्री उद्धवराज शास्त्रीने पू. आचार्य महाराजश्रीके आशीर्वाद द्वारा अस्ट्रेलियाके सिडनी शहरमें प्रत्येक शनिवारके दिन श्री तारतम सागरका पाठ, पारायण तथा सत्संगका सुन्दर आयोजन किया है। सत्संगके माध्यमसे सुन्दरसाथमें धर्मके प्रति आस्था जाग्रत हो ऐसी शुभकामना।

– संपादक

# साहित्य सेवा

**दिल्ही ( द्वारकाजी ) :** श्री बासु आहुजाके सुपुत्र मनीष कृति आहुजाके जन्म दिनकी खुशीमें साहित्य सेवाके लिए रु. ११००/ प्राप्त हुए हैं। जन्म दिनकी भूरि भूरि शुभकामनाएँ।

**दिल्ही :** श्रीमती कान्ता खुराना द्वारा साहित्य सेवामें रु. २५१/ भेट प्राप्त हुए हैं।

**काठमाण्डौं :** काठमांडौ निवासी श्रीमती व्रजमाया श्रेष्ठजीको २०६६–६–१३ गते धामगमन भएको हुनाले उहाँको आत्मशान्ति हेतु श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाको साहित्य सेवामा परिवार तर्फबाट रु.२५०/ भेट प्राप्त भएको छ।

**नेपाल :** धुलाबारी (मोरंग) निवासी जय प्रसाद दहालले धा.वा. पिताजी श्री गंगा प्रसाद दाहालको आत्मा शान्ति हेतु साहित्य सेवामा रु. १०१/ भेट प्रदान गर्नु भएको छ।

**नेपाल:** बाहुनडाँगी(झापा) निवासी श्रीमती खिनमाया घिमीरेको धामगमन वि.सं. २०६६–३–२५ गते भएको हुँदा वहाँको दुःखद स्मृतिमा परिवार तर्फबाट श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पत्रिकाको साहित्य सेवामा रु.१०१/ अर्पण भएको छ।

**असम :** शुकलाई असम निवासी धा.वा. दुर्गा प्रसाद कोइरालाजीकी वार्षिक तिथिमें उनके सुपुत्र श्री भवानी प्रसाद कोइरालाने १३–१०–२००९ को पोरबन्दर श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिरमें अखण्ड पारायण तथा सुंदरसाथको रसोईकी सेवा कर पत्रिकाकी साहित्य सेवामें रु. १५०/ अर्पण किए हैं।

**मुम्बई :** बोरीवली निवासी सुश्री गीतांजली चौबेने श्री प्राणनाथ ज्ञानकेन्द्र बोरीवलीमें प्राणनाथ प्राक्ट्योत्सव मनानेकी खुशीमें साहित्य सेवामें रु. १०१/ भेट अर्पण किये हैं।

# पक्की रसोईकी सेवा

| | |
|---|---|
| ०१.श्री हरिशंकर श्रेष्ठ | काठमाण्डौं ( नेपाल ) |
| ०२.श्री बाबुभाई रामजीभाई चोवटीया ( धारेश्वर डेरी ) | जामनगर |
| ०३.श्री सुरेशभाई कान्तिलाल पानाचन्दभाई पटेल | फतेपुर |
| ०४.धा.वा. धनजीभाई वीरजीभाई संघाणी | जामनगर |
| ०५. पुजारी श्री यमनाथजी शास्त्री | श्री ५ नवतनपुरी धाम |
| ०६.श्री रोनककुमार रजनीकान्त पटेल | मोटी-कारडी |
| ०७.श्रीमती जयाबेन जयन्तीलाल बाबरीया | मुम्बई |
| ०८.श्री भोगीभाई करमशीभाई पटेल | अन्जार |
| ०९.श्री राहुलकुमार जयन्तीभाई भन्डेरी | अहमदाबाद |
| १०.श्री राज भरोसे | - |
| ११.श्री दीपकभाई साडीवाला | खम्भात |
| १२.श्रीमती रीटाबेन अनिलकुमार भावसार | धोली-कुवा |
| १३.धा.वा. माणेकबेन समजुभाई गोहिल | जेतपुर |
| १४.श्रीमती दीपाबेन निलेषभाई मोदी | सुरत |
| १५.श्री आशाबेन तथा अमीबेन मोदी | सुरत |
| १६.श्री गीताबेन अरविन्दभाई मोदी | सुरत |
| १७.धा.वा. मोहनदासजी पुजारी | श्री ५ नवतनपुरी धाम |
| १८.श्री रवजीभाई मावजीभाई वागडीया | धूलसीया |
| १९.श्री सुरेशभाई छगनभाई जरीवाला | सुरत |
| २०.श्री चिरागभाई प्रेमजीभाई साजित्रा | राजकोट |
| २१.श्री वल्लभभाई धनाभाई मेन्दपरा | जामनगर |
| २२.श्री विपिनभाई डाह्याभाई पटेल | हिंमतनगर |
| २३.श्री कमलेशभाई विठ्ठलभाई पटेल | निकोडा |
| २४.श्री मुकेशभाई जमनभाई भन्डेरी | माण्डासण |
| २५.श्री अश्विनभाई शान्तिलाल पटेल | अहमदाबाद |
| २६.श्री वसन्तभाई नारणभाई चौहाण | - |

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर भिवानीके वार्षिक उत्सवकी झांकी

नवनिर्मित श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर मेंदरडा जूनागढमें पूजा प्रतिष्ठा अवसरके दृश्य

जामनगरके तेजस्वी विद्यार्थियोंको सरस्वती सम्मान प्रदान समारोहके अवसर
पर दीप प्राकट्य एवं सभाको सम्बोधन करते हुए शास्त्री श्री लक्ष्मण चैतन्यजी

श्री ५ नवतनपुरी धाममें श्रीमद्भागवत कथा करते हुए श्री प्रह्लादराज शास्त्री

RNI No. GUJ BIL /2006/16311 Registration No. GJN-[illegible] 2009-201

श्री ५ नवतनपुरी धाम स्थापना दिवस एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्म महामहोत्सव
१२००० पारायणकी स्मृतिमें आयोजित श्री मेहेर सागर पाठ एवं सत्संगकी झांकी ।

सद्गुरु मन्दिर श्री ५ पद्मावतीपुरी धाममें कलश महोत्सवके अवसर पर आयोजित
श्री तारतम सागरके १०८ पारायणका शुभारंभ, ध्वजारोहण तथा शरदपूर्णिमा महोत्सवमें
सभाको सम्बोधन करते हुए परम पू.आचार्य महाराजश्री एवं सन्त गुरुजन

PRINTED BOOK

TO :

SHRI KRISHNA PRANAMI DHARMA PATRIKA
SHRI 5 NAVTANPURI DHAM JAMNAGAR - 361 001 (INDIA)